2020

SANSKRIT

[HONOURS]

Paper : IV

Full Marks : 100 Time : 4 Hours

The figures in the right-hand margin indicate marks.

Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable.

1. Answer any **five** questions: 1×5=5

যে-কোনো **পাঁচটি** প্রশ্নের উত্তর দাও ঃ

a) Which topic is furnished in the Chapter-VII of 'मनुसंहिता'?

কোন্ বিষয়টি 'मनुसंहिता'-এর সপ্তম অধ্যায়ে বর্ণিত হয়েছে?

b) ''सर्वतेजोमयो हि सः''—Who is 'सर्वतेजोमयो'?

''सर्वतेजोमयो हि सः''—'सर्वतेजोमयो' কে?

c) ''जाङ्गलं शस्यसम्पन्नमार्यप्रायमनाविलम्''—What is the meaning of the word 'जाङ्गलम्' ?

''जाङ्गलं शस्यसम्पन्नमार्यप्रायमनाविलम्''—'जाङ्गलम्'-এই পদটির কি অর্থ?

d) What is 'त्रयी' according to Kauṭilya?

কৌটিল্যর মতানুযায়ী 'त्रयी' বলতে কি বোঝায়?

e) Why was वैदेहः करालः perished?

वैदेहः करालः কেন বিনাশপ্রাপ্ত হয়েছিলেন?

f) Mention the name of the commentator of 'मिताक्षरा' commentary on 'याज्ञवल्क्यसंहिता'।

'याज्ञवल्क्यसंहिता'-এর 'मिताक्षरा' টীকাকারের নাম উল্লেখ কর।

g) ''अशोतिभागो वृद्धिः स्यात् मासि मासि सबन्धके''—What is the meaning of the sentence?

''अशोतिभागो वृद्धिः स्यात् मासि मासि सबन्धके''—এই বাক্যটির অর্থ কি?

2. Answer any **ten** questions: 2×10=20

যে-কোনো **দশটি** প্রশ্নের উত্তর দাও ঃ

a) According to Manu which fort is the best for the king and why?

মনুর মতানুযায়ী রাজার পক্ষে কোন্ দুর্গ শ্রেষ্ঠ ও কেন?

b) "बालोऽपि नावमन्तव्यो मनुष्य इति भूमिपः"—Inspite of being in his boyhood why should a king not be ignored of and treated as a mere human being of the common sort?

"बालोऽपि नावमन्तव्यो मनुष्य इति भूमिपः"—বালক হলেও রাজাকে সাধারণ মনুষ্য জ্ঞানে অবজ্ঞা করা উচিৎ নয় কেন?

c) "সমমব্রাহ্মণে দানং দ্বিগুণং ব্রাহ্মণব্রুবে"—Explain the word 'বাহ্মণব্রুব' as furnished by 'মনু' in 'মনুসংহিতা'.

"সমমব্রাহ্মণে দানং দ্বিগুণং ব্রাহ্মণব্রুবে"—'মনুসংহিতা'-তে মনুকর্ত্তৃক উপস্থাপিত 'বাহ্মণব্রুব' পদটি ব্যাখ্যা কর।

d) Give the characteristics of 'আন্বীক্ষিকীবিদ্যা' after Kauṭilya.

কৌটিল্য অনুসারে 'আন্বীক্ষিকীবিদ্যা'-র বৈশিষ্ট্যগুলি উপস্থাপিত কর।

e) Quote the view of 'ভারদ্বাজ' about the selection of ministers (অমাত্যোপত্তিঃ) described by Kauṭilya.

কৌটিল্যবর্ণিত 'অমাত্যোপত্তিঃ' বিষয়ে 'ভারদ্বাজ'-এর মতামত উল্লেখ কর।

f) "তেন ভৃতা রাজানঃ প্রজানাং যোগক্ষেমবদ্ধা"—What is the meaning of 'যোগক্ষেম' as furnished in Arthaśāstra?

"তেন ভৃতা রাজানঃ প্রজানাং যোগক্ষেমবদ্ধা"—অর্থশাস্ত্রে উপস্থাপিত 'যোগক্ষেম' শব্দটির অর্থ কি?

g) What are the characteristic features of the messenger like নিসৃষ্টার্থ?

নিসৃষ্টার্থ-দূতের বৈশিষ্ট্যগুলি কি কি?

h) What are the general features of the লুব্ধবর্গs?

লুব্ধবর্গ-এর সাধারণ বৈশিষ্ট্যগুলি কি কি?

i) "স্মৃত্যোবিরোধে ন্যায়স্তু বলবান্ ব্যাবহারতঃ।
অর্থশাস্ত্রান্তু বলবদ্ধর্মশাস্ত্রমিতি স্থিতি।।"

—Write the meaning of the above mentioned śloka.

উপরে উল্লিখিত শ্লোকটির অর্থ লেখ।

j) What is 'আধি' according to 'যাজ্ঞবল্ক্য'?

'যাজ্ঞবল্ক্য'-এর মতানুসারে 'আধি' কি?

k) According to 'যাজ্ঞবল্ক্য', what is the monthly interest of mortgaged debt?

'যাজ্ঞবল্ক্য'-এর মতানুযায়ী সবন্ধক ঋণের ক্ষেত্রে মাসিক বৃদ্ধি বা সুদ কত হবে?

l) Who is 'প্রতিভূ'? How many প্রতিভূ's are mentioned by 'যাজ্ঞবল্ক্য'?

'প্রতিভূ' কে? 'যাজ্ঞবল্ক্য' কতজন প্রতিভূ-র উল্লেখ করেছেন

3. Answer any **five** questions: 6×5=30

যে-কোনো **পাঁচটি** প্রশ্নের উত্তর দাও ঃ

a) Translate into Bengali or English:

বাংলা অথবা ইংরেজীতে অনুবাদ কর ঃ

नेति बाहुदन्तीपुत्रः। शास्त्रविददृष्टकर्मा कर्मसु विषादं गच्छेत्।

अभिजनप्रज्ञाशौचशौर्यानुरागयुक्तानमात्यान् कुर्वीत, गुणप्राधान्यदिति।

सर्वमुपपन्नमिति कौटिल्यः, कार्यसामर्थ्याद्धि पुरुषसामर्थ कल्प्यते।

OR

न हि एवं विधं वशोपनयनमस्ति भूतानां यथा दण्ड इत्याचार्याः।

नेति कौटिल्यः। तीक्ष्णदण्डो हि भूतानामुद्वेजनीयः। मृदुदण्डः परिभूयते।

यथार्हदण्डः पूज्यः। सुविज्ञातप्रणीतो हि दण्डः प्रजा धर्मार्थकामैर्योजयति।

b) Explain fully in Sanskrit:

সংস্কৃত ভাষায় ব্যাখ্যা কর ঃ

सर्वो दण्डजितो लोको दुर्लभो हि शुचिर्नरः।

दण्डस्य हि भयात् सर्वजगद् भोगाय कप्लते।।

OR

नास्य छिद्रं परो विद्याद् विद्याच्छिद्रं परस्य तु।

गूहेत् कूर्म इवाङ्गानि रक्षोत् विवरात्मनः।।

c) Write a short note on 'व्यसन' according to Manu.

মনুর মতানুযায়ী 'व्यसन' সম্পর্কে একটি সংক্ষিপ্ত টীকা লেখ।

d) What are the qualities, importance and duties of a messenger as stated in the 'मनुसंहिता'?

'मनुसंहिता'-তে বর্ণিত দূতের গুণাবলী, গুরুত্ব ও কার্যাবলী কি কি?

e) Write a brief note on the 'उपनिधि' after 'याज्ञवल्क्य'.

'याज्ञवल्क्य' অনুসরণে 'उपनिधि' সম্পর্কে সংক্ষেপে লেখ।

f) Write a short note on 'संसृष्टी', according to 'याज्ञवल्क्य'।

'याज्ञवल्क्य'-এর মতানুযায়ী 'संसृष्टी' সম্পর্কে সংক্ষেপে লেখ।

g) According to 'कौटिल्य', what steps should be taken by a king to win over the dissatisfied क्रुद्धवर्गs?

কৌটিল্যের মতানুযায়ী একজন রাজা কি প্রকারে অতৃপ্ত ক্রুদ্ধবর্গ-দের উপর জয়লাভ করতে সমর্থ হবেন?

4. Answer any **three** questions: 12×3=36

যে-কোনো **তিনটি** প্রশ্নের উত্তর দাও ঃ

a) "स राजा पुरुषो दण्डः सनेता शासिता च सः"—Justify the quotation with relevant verses.

"स राजा पुरुषो दण्डः सनेता शासिता च सः"—প্রাসঙ্গিক শ্লোকসহ উক্তিটির যাথার্থ্য নির্ণয় কর।

b) What is 'षाड्गुण्य'? When and how can these षाड्गुण्यs be implemented for the sake of 'राजधर्म'? Discuss after Manu. 2+5+5

षाड्गुण्य কি? রাজধর্ম পালনের জন্য কখন ও কিভাবে এই षाड्গুণ্য-কে প্রয়োগ করতে হবে, মনুকে অনুসরণ করে আলোচনা কর।

c) Write a comprehensive note on 'इन्द्रियजय' after कौटिल्य.

কৌটিল্য-এর অনুসরণে 'इन्द्रियजय'-এর উপর একটি বিস্তৃত আলোচনা কর।

d) What is 'व्यवहार'? How many divisions are there? Write an elaborate note on 'व्यवहार' after 'याज्ञवल्क्य'. 2+4+6

'व्यवहार' কাকে বলে? এর কটি পাদ বা বিভাগ আছে? 'याज्ञवल्क्य'-এর অনুসরণে ব্যবহার-এর উপর একটি বিস্তৃত আলোচনা কর।

5. Summarise the following passage in Sanskrit Language with **देवनागरी** Script: 9

দেবনাগরী-লিপিতে অনুচ্ছেদটি সংস্কৃতে সংক্ষিপ্ত কর ঃ

अस्ति भारतवर्षे उत्तरस्यां दिशि हिमालयो नाम पर्वतराजः। स पृथिव्या मानदण्ड इव राजते। न केवलं भारतवर्षे एव अपि तु अखिले जगति ये पर्वतास्तेषामुन्नततमः श्रेष्ठश्चायं हिमालयः। अस्य तुङ्गानि शिखराणि सर्वदा हिमेनाच्छ न शोभन्ते। अतोऽयं हिमालय इति नाम भजते।

OR

कश्चित् मेषपालको बालको व्याघ्रमदृष्ट्वापि कौतुकात् 'व्याघ्रोऽयम्' इति मिथ्या उच्चैः शब्दायमास। एवं क्रमेण स्वकार्यात् विरतेषु जनेषु समागतेषु सोऽपि मिथ्यावादी तान् दृष्ट्वा उच्चैर्जहास। ततः सत्यं हि एकदा व्याघ्रः समागतः। बालकोऽपि उच्चैस्तान् पुनः पुनरपि आहूतवान्। तत् श्रुत्वापि तस्य वचनं मिथ्या इति वदन्तस्ते तु न समागता।ः